श्री वटुक पूजा विधिः

(संशोधित परिवर्द्धित संस्करण)

शास्त्र - सम्मत

श्री वटुक-पूजा-विधि

(संशोधित परिवर्द्धित संस्करण)

Shree Gopinath Jee Trust (Regd.)
LIBRARY
Acc. No. 378
Price
6/5/03

प्रणेता :

पण्डित प्रेमनाथ हण्डू

साहित्यशास्त्री, प्रभाकर

शीतलनाथ-सत्थू, श्रीनगर ।

Library Bhaghwan Gopinath Jee Trust (Regd.)
Acc No 595
Date 1983
Price 2.50
Bohri Jammu

प्रकाशक :-

श्री परमानन्द प्रत्नविद्या शोध-संस्थान

Shree Parmanand Research Institute (Regd.)

श्री रूपा देवी शारदापीठ ट्रस्ट के अधीनस्थ)

(Under the auspicious of Shri Rupa Devi Sharada Peetha Trust)

श्रीनगर (काश्मीर)

Srinagar-Kashmir.

द्वितीय संस्करण

वसन्त पञ्चमी

1981.

मूल्य ढाई रुपये

अनुक्रम !!!

प्रस्तुत द्वितीय संस्करण को श्रद्धालु जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुये हमें यह उत्साहवर्धक आभास मिल रहा है कि हमारे पण्डित-भाई वातावरण तथा दृष्टिकोण के बदलते परिवेश में भी अपनी सनातन परम्परा के सजग प्रहरी हैं, अपनी विशिष्ट संस्कृति, मर्यादा तथा धर्म की त्रिवेणी उन्हें बराबर मनोबल प्रदान करती है; यह प्रबुद्ध पण्डित समाज अच्छी तरह समझता है कि अतीत से कट जाना वर्तमान की आत्म-हत्या कहलायेगी और वे इस आत्मप्रवंचना में कदापि रहना नहीं चाहते; जीवन का यथार्थ सत्य यही है ।

इस के साथ ही हमें ब्राह्मण महामंडल कश्मीर का आभार स्वीकार है जिन के सत्परामर्श के प्रकाश में हमने इस संस्करण में "वैश्वदेव अनुष्ठान" का परिवर्द्धन किया है और जिसे भली-भान्ति सम्पन्न करने में पं० प्रेमनाथजी हण्डू ने हथोचित परिश्रम करके हमारे संकल्प को अक्षरशः चरितार्थ किया है;

आशा है कि यह द्वितीय संस्करण प्रथम ही की तरह हमारी धर्म-प्राण जाति के लिये उपयोगी सिद्ध होगा ।

विनीत

प्रो० काशी नाथ दर

संचालक श्री परमानन्द रिसर्च इन्सटिट्यूट

श्रीनगर ।

पहली बात !!!

प्रातः-स्मरणीय महामुनि कश्यप जी की मानस-पुत्री कश्मीर में आदि-काल से जो भी पर्व मनाये जाते हैं, उनमें 'शिवरात्री' सर्वोपरि हो नहीं, अपितु सर्वमान्य भी है, इस तथ्य का सबल प्रमाण हमें इस बात से स्वतः सिद्ध मिल जाता है कि इस महोत्सव का आयोजन बराबर फाल्गुण कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से अमावस्या तक चलता रहता है। पूरा एक पखवाड़ा इस महापर्व को मनाने में व्यतीत होता है, घरों की लिपाई-पुताई, वस्त्रों का प्रक्षालण, मिट्टी से निर्मित वटुक का क्रय, माण्डे-बर्तन की सफाई इत्यादि इस पक्ष की जीवन्त कड़ियां है, जिन को क्रमानुसार जोड़ कर ही 'शिवरात्री पूजा' सम्पूर्ण समझी जाती है। इस प्रकार घरों और शरीर को स्वच्छ बनाकर त्रयोदशी की पुण्य-तिथि पर मन, काया और प्राण का मधुर समन्वय इसी धार्मिक अनुष्ठान से सुलभ हो पाता है, इहलोक और परलोक के बीच की लक्ष्मन-रेखा बिना आयास के कट जाती है।

कश्मीर प्रदेश में यह महापर्व 'वटुक-पूजा' के रूप में मनाया जाता है, स्पष्ट कारणों से यह 'भैरव पूजा' ही है। 'भरण', 'रमण' के प्रतीक भैरव को तृप्ति हो इसका मूल उद्देश्य है। काश्मीरी-पण्डित अपना-अपनी कुल-रीति के अनुसार इपे सामिष अथवा निरामिष पद्धति से सम्पन्न करते हैं। सम्भवतः इस शुभ-दिन पर मांस मछली के प्रयोग का निराकरण करने के हेतु हो इस से एक मास पूर्व 'शिव चतुर्दशी' का व्रत नितान्त निरा-मिष रीति से पूरा किया जाता है, माघ कृष्ण-पक्ष एकादशी अथवा द्वादशी से आरम्भ होकर यह व्रत बराबर अमावस्या तक चलता रहता है, और इन तीन-चार दिनों के बीच एक दिन को एकादशी व्रत फलाहार का सेवन करने से प्रतिपादित होता है।

मानव—संस्कृति और सनातन मर्यादा पर हर युग में चिरवसन्त छाया रहता है, यह कभी भी बासी नही पड़ सकती । नवीन वास्तव में प्राचीन की नई मांगों के अनुरूप पुनर्व्याख्या है, यह एक निरन्तर और अजस्रप्रवाह है, लहरें बनती है बिखरती है परन्तु रुकती नही । इसी तरह संस्कृति और मर्यादा नितनयी आस्थाओं का संबल पाकर मानव-मन के लिये मानसिक खाद्य प्रस्तुत करती जाती है, शरीर की पुष्टि के साथ—साथ उसक आत्मा की भूख को मिटाती हैं। जीवन का यथार्थ सत्य यही है । जीवन की इन्द्र धनुषी भाव - भूमि में इन पर्वों का बहुत ही महत्व-पूर्ण दायित्व है, ये इसमें मन-चाहें रंगों की आभा को अधिक आकर्षक बनाते हैं, शास्त्र-सम्मत विधि-विधानों का पालन इन में सरस निखार ले आता है । परम-सत्ता के विश्वोत्तीर्ण और विश्वमह रूप एकाकार हो उठते हैं, जड़ जीव और चेतन पर ब्रह्म के बीच की दूरियां सहज में कट जाती हैं, अतः ये पर्व हमारी शाश्वत सांस्कृतिक थाती के प्रकाश—स्तम्भ हैं, जिन की प्रेरणा से हम यथार्थ और आदर्श के मध्य की दूरी मापने का अधिकार पा सकते हैं । इसी प्रांजलध्येय का सामने रख परमानन्द रिसर्च इनस्टिच्यूट, श्रीनगर ने 'कर्मकाण्ड माला' का दायित्व अपने ऊपर ले लिया है, इस प्रकार के आयोजन की उपादेयना इस कारण से और भी बढ़ जाती है, कि हमारा पुरोहित—वर्ग अब दिनों दिन इस व्यवसाय की ओर उपेक्षा बरतता जा रहा है, इन की अगली पीढ़ी का उभरना अब कठिन ही नही असम्भव भी है, इस अपेक्षा का प्रमुख कारण अब ले—दे कर आर्थिक ही रह पाया है, इस जटिल जीवन को यह व्यवसाय अब दो जून रोटा जुटाने के योग्य नही है, अतः इस प्रकार की उपेक्षा क्षम्य ही है। परन्तु काश्मीरी पण्ड़ितो को अब एक दूसरे के कन्धे से कन्धा मिला कर इस कर्मकाण्ड़ की तरंगिणी को सूखने से बचाने का भगीरथ-संकल्प करना होगा, इसी निमित की पूर्ति के लिए प्रस्तुत कर्मकाण्ड मांला का प्रणयन किया जा रहा है, और हमारे संस्थान को पूरी आशा है कि हमारे पण्ड़ित-भाई इस का सदुपयोग कर के पुरोहित - वर्ग के अभाव को खटकने नही देंगे ।

आजकल की मदान्द भौतिकता ने नैतिकता को बहुत पीछे धकेल दिया है, धर्मामृत से ही नैतिक मूल्यों का सिचन होता है और धर्मरूपी

अश्वत्थ की जडें तब ही सुरक्षित रह सकती हैं जब इन पर कर्मकाण्ड की संजीवनी का लेप किया जाये । इस के साथ ही हम यह भी मानते है कि आज का जीवन बहुत व्यस्त और संकुल है, अतः आज का मानव उधार मांगे समय पर जीवनोपार्जन करता है, इसीलिए प्रस्तुत 'वटुक पूजा' का संक्षिप्तीकरण हम सब के लिए अभीष्ट बन जाता है, इस दिशा में हम "पं० प्रेमनाथ जी हण्डू", साहित्य शास्त्री, प्रभाकर सत्थू-निवासी, के आभारी है, जिन्होंने ऐसे उपादेय संस्करण का प्रणयन कर के काश्मीरी पण्डित जनता की चिर-वांछित अभिलाषा पूरी की । हमें विश्वास है कि इस के प्रकाशन से हमारे ट्रस्ट के प्रथम प्रधान दिवंगत पं० परमानन्द की आत्मा को वस्तुतः परमानन्द का साक्षात्कार होगा, जिन्होंने जीवन भर की पूंजी संस्कृत-प्रचार तथा धर्मोद्धार में लगा दी । उनकी पावन-स्मृति शैल-मालाओं पर सुसज्जित कुँवारी बर्फ से आज तक बराबर होड़ ले रही है, और हमें इस प्रशस्त पथ पर दुगुने उत्साह से अग्रसर करने की सशक्त प्रेरणा दे रही है ।

हमारा कर्मकाण्ड के ज्ञाताओं से सनम्र निवेदन है कि वे यदि इस में किसी यथोचित प्रकार का परिवर्द्धन अथवा संशोधन करना चाहे, तो हमें सूचित करें, अगले संस्करण में उन का बहुमूल्य परामर्श साभार यथासंगत स्थान पायेगा । सृजनात्मक आलोचना का स्वागत करना हमारा कर्तव्य ही नहीं धर्म भी है ।

विनीत (प्रो०) काशीनाथ दर
संचालक श्री परमानन्द रिसर्च इनस्टिच्यूट,
श्रीनगर–काश्मीर ।

ॐ

श्री वटुक नाथ भैरवाय नमः

श्री वटुक नाथ–पूजा मण्डप

प्रणेता :- श्री प्रेम नाथ हण्डू, सत्थू ।

प्रकाशक - श्री परमानन्द - रिसर्च - इनस्टीच्यूट, श्रीनगर ।

श्री वटुक भैरवाय नमः

कुलाकुलपदे योऽसौ पालको भूतविग्रहः ।
चिदानन्दरस पूर्णं वन्दे वटुकभेरवम् ॥

पूजक सर्व प्रथम पूर्व दिशा की तरफ श्री वटुक भैरव को पूर्ण रूप से सजावे, ईशान कोण (अपने बायें तरफ के उपरले कोण) पर 'ब्रह्म कलश' चूने से बनावे, उसके अष्टदल कमल पर कलश-पात्र को रखे, जिस में दर्भ का बनाया हुआ विष्टर हो, पात्र जलसे भरा हो, और अखरोटों से युक्त हो। जैसा कि संलग्न चित्र पर स्पष्ट है।

इस प्रकार वटुक भैरव की सारी सामग्रीं को अपने अपने स्थान पर रख कर धूप और दीप को जलावें, और अब पूजा आरम्भ करें :

सर्व प्रथम दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार करें, चावल और फूल कलश पर चढ़ाते जाये और पढ़ते जायें :-

ॐकारो यस्य मूलं क्रमपदजठरच्छन्द विस्तीर्णशाखा
ऋक्पत्रं सामपुष्पं यजुरचितफलः स्यादथर्वः प्रतिष्ठा ॥
यज्ञच्छाया सुशीतो द्विजगणमधुपैः गीयते यस्य नित्यं
शक्तिः सन्ध्या त्रिकालं दुरितभयहरः पातुनो वेदवृक्षः ॥

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैः मुखेस्त्रीक्षणैः
युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्वात्मवर्णात्मिकाम् ।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकरां शूलं कपालं गुणं
शङ्खं चक्र मथारबिन्द युगलं हस्तैः वहन्तीं भजे ॥

आयातु वरदा देवी त्र्यक्षरा ब्रह्मवादिनी ।
गायत्री च्छन्दसां मातः ब्रह्मयोने नमोस्तुते ॥

भद्रं पश्येम प्रचरेम भद्रं भद्रं वदेम शृणुयाम भद्रम् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः प्रथिवी रुतद्यौः॥
तद्विष्णोः परमंपदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुः
राततम् । तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते
विष्णोः यत् परमं पदम् ।

ओं गायत्र्यै नमः ॐ भूः भुवः स्वः तत्सवितुः वरेण्यम्
भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् ॥ ३ ॥

अब क्षेत्रपालों को जो वहां दो 'सन्यवारियां' हैं, उन्हें केवल चावल डालते हुए पढ़ते जाये ।

रात्रीं प्रपद्ये जननीं सर्वभूतनिवेशनीम्
भद्रा भगवतीं कृष्णां विश्वस्य जगतो निशाम् ।
संवेशिन संयमिनीं ग्रहनक्षत्र मालिनीं
प्रपन्नोहं शिवां रात्री भद्रे पारमशीमहि नमः ॥
कालरात्र्यै नमः, तालरात्र्यै नमः, राज्ञिरात्र्यै नमः,
शिवरात्र्यै नमः, तेजाय नमः, चण्डाय नमः,
समस्त क्षेत्रपाल देवताभ्यो नमः ।

अब प्रणीतपात्र (अर्घ्य) या किसी भी छोटे पात्र में, चावल, पानी, तिलक और विष्टर नीचे लिखित ३ मन्त्रों से ३ बार फूल डालते जाइये :

१. संव्या सृजामि हृदय संसृष्टं मनो अस्तु वः ।
२. संसृष्टा स्तन्वः सन्तु वः संसृष्टाः प्राणो अस्तु वः ।

३. संय्यावः प्रिया स्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः
आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रिया स्तन्वो मम ॥

अब इसी पात्र के बिष्टर से इसी पात्र का जल कलश और क्षेत्रपालों पर छिडकते हुए पढ़ते रहना।

१, अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीव ।
२. मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीव ॥
३. बृहस्पतेः प्राणःसते प्राणन्दत्तां तेन जीव ॥

(इसे जीवाधान कहते है)

जीवाधान देकर नीचे लिखित शुभ नामों से कलश देव पर 'तिलक लगाते और पुष्प चढ़ाते पढ़िये :—

महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे, द्वादेवताभ्यः प्रजापतये, ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः (फाल्गुणे) शक्ति सहिताय चक्रिणे, क्रिया सहिताय गोविन्दाय, समालभनं गन्धोनमः अर्घोनमः पुष्पं नमः ॥

अब क्षेत्रपालों पर भी नीचे लिखे शुभ नामों से तिलक और फूल चढ़ाये :—

कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै, तेजाय, चण्डाय, समस्त क्षेत्रपाल देवताभ्यः, समालभनं गन्धो नमः अर्घोनमः, पुष्पं नमः

इस के अन्त में 'तिल-चावल-दही और शक्कर' सब एक करके कलश के सामने रखिये, इसी को कलश का नैवेद्य मानकर समर्पण करे, अपना हाथ नैवेद्य के साथ लगाते हुए पढ़िये :—

सावित्राणि, सावित्रस्य, देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोः बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां आदधे। महागणपतये कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वादेवताभ्यः (फाल्गुणे) शक्ति सहिताह चक्रिणे, क्रिया सहिताय गोविन्दाय, प्रजापतये ब्रह्मणे, कलश देवताभ्यः।

कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्य, शिवरात्र्यै तेजाय, चण्डाय, समस्त क्षेत्रपाल देवाताभ्यः, तिल तण्डुल मात्रं दधि मधु मिश्रं ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः ॥

अन्त में निम्नलिखित वेद ऋचा से कलश और क्षेत्रपालों पर पुष्प वृष्टि करते रहिए :-

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवी द्या मुत मां कस्मै देवाय हविषा विधेम, ॥

(कलश पूजा समाप्त)

अथ वटुक पूजा विधिः

पूजक सर्वप्रथम पूजा सामग्री को यथास्थान रखकर बीच में भद्रपीठ पर 'सन्य पुतलू' अथवा शिव मूर्ति को स्थापित करे, फिर विष्टर वाले पात्र से निर्माल्य पात्र में यह पढ़ते हुए पानी डालते जाइये :-

अस्य श्री आसन-शोधन-मन्त्रस्य, मेरु-पृष्ट-ऋषि।
सुतलं-छन्दः कूर्मो-देवता, आसन शोधने विनियोगः ॥

१. मेरु पृष्ट ऋषये नमः शिरसि
दोनों हाथों से सिर का स्पर्श करें
२. सुतलंच्छन्दसे नमः मुखे
दोनों हाथों से मुँह का ,,
३. कूर्मो देवतायै नमः हृदि
दोनों हाथों से हृदय का ,,
४. आसन शोधने विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु
दोनों हाथों से सब अंगों का ,,

अब भूमि की पूजा निमित दर्भ के दो काण्ड (तिनके) आसन बिछाने के लिए भूमि पर रखे, साथ ही यह पढ़ते जाइये :-

ध्रुवाद्यौः ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वताइमे ।
ध्रुवं विश्वमिदं जगत् ध्रुवो राजा विशामसि ॥

अब भूमि को तिलक और फूल लगाते पढ़िये :—

ग्रीं पृथिव्यै आधार शक्त्यै समालभनं गन्धो नमः
अर्घोनमः पुष्पं नमः ॥

दोनों हाथ जोड़कर मातृभूमि से प्रार्थना निमित नमस्कार करे और पढिये :—

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

अब बटुक भैरव का मन में ध्यान कीजिये, और दोनों हाथ जोड़ के यह श्लोक पढ़ते जाइये :—

१. शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये
अभिप्रेतार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि ।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्रीगणाधिपतये नमः ॥

२. नाथं नाथं त्रिभुवननाथं भूतिसित् त्रिनयनं
त्रिशूलधरम् ।
उपवीतीकृतभोगिन—मिन्दुकला शेखरं वन्दे ॥

३. गुरुः ब्रह्मा गुरुः विष्णुः गुरुः साक्षात् महेश्वरः ।
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
गुरवे नमः, परम गुरवे नमः परमेष्ठिने गुरवे नमः
परमाचार्याय नमः, आद्य सिद्धेभ्यो नमः ।

अब अपनी शुद्धि के लिए पूजक इस प्रकार न्यास करें :-

ॐ - अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

हाथों को सब अंगुलियों से अंगूठे का स्पर्श करें ।

न - तर्जनीभ्यां नमः

अंगूठे से हाथ की दूसरी उंगली का स्पर्श करें ।

मः - मध्यमाभ्यां नमः

अंगूठे से हाथ की बीच वाली उंगली का स्पर्श करें ।

शि - अनामिकाभ्यां नमः

अंगूठे से हाथकी चौथी उंगली का स्पर्श करें ।

वा - कनिष्टिकाभ्यां नमः

अंगूठे से हाथकी सब से छ टी उंगली का स्पर्श करें ।

य - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

दोनों हाथों से दोनों हाथों को आगे पीछे स्पर्श करें

इसे करन्यास (हाथों की शुद्धि) कहते हैं ।

अब षडङ्गन्यास (सब अंगों की शुद्धि) इस प्रकार कीजिये :

ॐ	- हृदयाय नमः	दोनों हाथों से हृदय का	स्पर्श करें ।
न	- शिरसि स्वाहा	,, सिर का	,,
मः	- शिखायै वौषट्	,, शिखा का	,,
शि	- कवचाय हूं	,, कान की लवों का	,,
वा	- नेत्रत्रयाय वौषट्	,, आंखों का	,,
य	- अस्त्राय फट्	,, चुटकियों को बजावे ।	

इस प्रकार शरीर की शुद्धि करके पूजा-मण्डप के चारों ओर विघ्न करने-वाले सारे भूत-प्रेतादिकों को दूर और नष्ट करने के लिए अपने दोनों कन्धों के उपर से तिल फेंकते हुए यह पढ़िये :

अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भुवि संस्थिताः ।
ये भूताः विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

अब पूजक अपने मुंह और पाऊं पर इस मन्त्र से जल छिडकें ।

तीर्थेस्नेयं-तीर्थमेव समानानां भवति, मानः शंस्योऽरुषो धूर्तिः प्राणड् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते ॥

दायें हाथ की अनामिका (चौथी उंगली) में पवित्र धारण करते पढिये :- (पवित्र-दर्भ से निर्मित मुद्रिका)

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमसि सहस्रधार-मयद्मा वः प्रजाया स सृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्ति ।

अपने आप को पूजक तिलक और पुष्प लगाते पढे :-

स्वात्मने शिवस्वरूपाय समालभनं गन्धोनमः
अर्घो नमः पुष्पं नमः ॥

दीवे को तिलक और फूल लगाते पढ़िये :-

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतास्तिमिरापहः ।
प्रसीद मम गोविन्द दीपोऽयं परिकल्पितः ॥

धूप को तिलक और फूल लगाते पढ़िये :-

वनस्पतिरसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं परिकल्पितः ॥

सूर्य भगवान् का ध्यान करते हुए उसी की ओर तिलक और फूल लगाते पढिये :

नमोधर्मनिधानाय नमः स्वकृत साक्षिणे ।
नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमोनमः ॥

निर्माल्य पात्र में अर्घ्य या (किसी पात्र) से तिलक-मिश्रित पानी ड़ालते हुए पढ़िये :-

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः भ्रातापि नो यत्र सुहृज्जनश्च। नज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिस्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये ॥

स्वात्मने शिव स्वरूपाय दीप धूप सकल्पात् सिद्धिरस्तु दीपो नमः धूपो नमः ।

तत्सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथावद्य फाल्गुण मासस्य कृष्ण पक्षस्य तिथौ त्रयोदश्यां (दिन का नाम लेना) वासरान्वितायां महागणपतये, कुमाराय श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे द्वादेवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश देवताभ्यः (फाल्गुणे) शक्ति सहिताय चक्रिणे, क्रिया सहिताय गोविन्दाय कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै,

पूर्वे=देवी पुत्र वटुक नाथाय	अग्नेये=भूत बलेभ्य,
दक्षिणे=अग्नि वेताल राजाय	नैर्ऋतये=बहुखातकेश्वराय
पश्चिमे=स्थान क्षेत्रपालाय	वायव्ये=मंगल राजाय
उत्तरे=योगिनी बलेभ्यः	ईशाने=विश्वक् सेनाय
पाताले=तेजाय	मध्ये=चण्डाय

समस्त शिवरात्री देवताभ्यः शिवरात्रीव्रत निमितं दीप धूपात्संकल्प सिद्धिरस्तु दीपोनमः धूपोनमः ॥

अपसव्येन=यज्ञोपवीत को बाएँ बाजू में पहिन कर अपने सारे पितरों को जल देवे ।

नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो नमो धर्माय विष्णवे ।
नमो यमाय रुद्राय कान्तारपतये नमः ॥

तत् सत् ब्रह्म (मास-पक्ष-तिथि और वार का नाम लेकर)

१. पित्रे पिता	२. पितामहाय दादा	३. प्रपितामहाय परदादा
१. मात्रे माता	२. पितामह्यै दादी	३. प्रपितामह्यै परदादी
१. मातामहाय नाना	२. प्रमातामहाय परनाना	३. वृद्ध प्रमातामहाय पर पर नाना
१. मातामह्यै नानी	२. प्रमातामह्यै परनानी	३. वृद्ध प्रमातामह्यै पर पर नानी

(और जितने भी सगे सम्बन्धी मरे हो)

समस्त माता पितृभ्यो द्वादशदैवतेभ्यः पितृभ्यः शिवरात्रि-व्रत निमित्तं दीपः स्वधा, धूपः स्वधा ॥

सव्येन= यज्ञोपवीत को फिर दायें बाजू में पहिन कर, फिर कलश पूजा की तरह यहां भी किसी पात्र में तिलक पानी और बिष्टर रख कर नीचे लिखित ३ मन्त्रों से ३ बार फूल डालिये :

१. संव्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः ।
२. संसृष्टाः तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः ॥
३. संय्यावः प्रियाः तन्वः संप्रिया हृदयानि वः
आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियः तन्वो मम ॥

अब इस के जल को इसी में रखे बिष्टर से सब देवों पर छिड़काते हुए यह पढिये:-

१. अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणन् दत्तान्तेन जीव ।
२. मित्रा वरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणन् दत्तान् तेन जीव
३. वृहस्पतेः प्राणः सते प्राणन् दत्तान् तेन जीव

इस प्रकार सब को जीवाधान देकर पूजक अब दर्भ के २ काण्ड लेकर वटुक देव से पूजा करने की आज्ञा मांगता है, और निम्न लिखित मन्त्र केवल पढ़ते जाता है :-

ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः
न- तर्जनीभ्यां नमः
मः- मध्यमाभ्यां नमः
शि- अनामिकाभ्यां नमः
वा- कनिष्टिकाभ्यां नमः
य- करतलकरपृष्टाभ्यां नमः

ॐ हृदयाय नमः
न- शिरसि स्वाहा
मः- शिखायै वोषट्
शि- कवचाय हूँ
वा- नेत्रत्रयाय वोषट्
य- अस्त्राय फट्

ॐ भूः पुरुषमावाहयामि नमः
,, भुवः पुरुषमावाहयामि नमः
,, स्वः पुरुषमावाहयामि नमः
,, भूर्भुवः स्वः पुरुषमावाहयामि नमः

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुः वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्राय विद्महे क्षेत्रेश मुख्याय धीमहि तन्नः वटुक भैरवः प्रचोदयात् ॥३॥

भगवतः भवस्य-देवस्य, शर्वस्य देवस्य, उग्रस्य देवस्य, महा देवस्य, पार्वतीसहितस्य परमेश्वरस्य, (कलशे) महागणपतेः कुमारस्य श्रियाः सरस्वत्याः लक्ष्माः विश्वकर्मणः द्वारदेवतानां प्रजापतये ब्रह्मणः कलश-देवतनां, कालरात्र्याः, तालरात्र्याः, राज्ञिरात्र्याः, शिवरात्र्याः तेजस्य चण्डस्य समस्त क्षेत्रपाल देवतानां शिवरात्रिव्रत निमितं, कलश पूजनं, शिवरात्री पूजन मर्चामहं करिष्ये ॐ कुरुष्व ।

आज्ञा लेकर सब देवताओं के लिये आसन बिछाना, आसन के निमित दर्भ के दो काण्ड़ सामने रखना और पढ़ते जाना :—

विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वरेश्वर ।
आसनं दिव्यमीशान दास्येहं परमेश्वर ॥

भगवतः भवस्य देवस्य— इदं आसनं नमः । ब्रह्मणः कलश देवतानां - इदं आसनं नमः । तेजस्य चण्डस्य समस्त शिवरात्री देवतानां इदं आसनं नमः ॥

अब पूजक हाथ में कुछ चावल के दाने और दर्भ के दो काण्ड लेकर सब का आवाहन करे और पढ़ते जाये ।

भगवते भवाय देवाय, ब्राह्मणे कलशदेवताभ्यः समस्त-शिवरात्री देवताभ्यः युष्मान् वः पूजयामि ॐ पूजय ।

इस प्रकार आवाहन की आज्ञा लेकर तन मन से आवाहन करते और पढ़ते जाये ।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योः मुक्षीय मामृतात् ॥

भगवन्तं भवंदेवं शंर्वदेवं उग्रंदेवं महादेवं, श्री वटुक भैरवं आवाहयिष्यामि ब्रह्माणं कलशदेवताः आवाहयिष्यामि । कालरात्रीं, तालरात्रीं, राज्ञिरात्रीं, शिवरात्रि, तेजं, चण्डं आवाहयिष्यामि ॐ आवाहय ।

अब बबरी काष्ट व सुगन्धित फूलों से सब का आवाहन करे, और पढ़ते जाये :-

१. कुलाकुलपदो योऽसौ पालको भूतविग्रहः ।
चिदानन्दरसपूर्णं वन्दे वटुकभैरवम् ॥

२. लिङ्गेच्य भक्तदयया क्षणमात्रमेकं
स्थानं विधाय भवमद्विहितां पुरारे ।
सर्वेश विश्वमयहृत् कमलाधिरूढः
पूजां गृहाण भगवन् भव मेऽद्य तुष्टः ॥

३. भूमेर्जलात्तु पवनादनलात् हिमांशोः
उष्णांशुतो हृदयतो गगनात् समेत्य ।
लिङ्गेत्र सन्मणिमये मदनुग्रहार्थं
भवत्यैकलभ्य भगवन् कुरु सन्निधानम् ॥

४. आयाहि भगवन् शम्भो सर्वेश गिरजापते ।
प्रसन्नो भव देवेश नमस्तुभ्यं हि शङ्कर ॥

५. भगवन् पार्वतीनाथ भक्तानुग्रह कारक ।
अस्मद् दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो ॥

६. इत्याहूय तु गायंत्री त्रिः समुच्चार्य तत्ववित् ।
मनसा चिन्तितैः द्रव्यैः देव मात्मनि पूजयेत् ॥

(तेजोरूपं ततः क्षिप्त्वा प्रतिमायां पुनर्यजेत्)

अब सब देवताओं को सामने साक्षात् मानकर उनके पाऊं धोने के लिए पानी तैयार करें। किसी पात्र (प्रणीतपात्र) में (जल, केसर, सर्वौषधि, लाजा और दर्भ का विष्टर) सब को इस मन्त्र से एकीकरण करें :-

'शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभि स्रवन्तुनः'

फिर यही जल सब पर छिडकाते जाइये, और पढ़ते जाइए।

महादेव महेशान महानन्द परात्पर।
गृहाण पाद्यं मद्दत्तं पार्वती सहितेश्वर ॥

भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय श्री वटुक भैरवाय-पाद्यं नमः। ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः पाद्यं नमः। तेजाय-चण्डाय समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः पाद्यं नमः।

बाकी बचा हुआ पानी छोडकर अब इन्ही देवताओं को अर्घ्य देवे (मुंह धोने के लिए) नया जल इसी पात्र में डाले, साथ ही दूध-दही - घी - जौ - चावल और बेर डाले, और सब को इसी उपरोक्त "शन्नो देवो" मंत्र से मिलाते रहिए; फिर यही जल सब देवों पर डालते जाइये और पढते रहिए।

त्र्यम्बकेश सदाधार विपदां प्रतिघातक।
अर्घ्यं गृहाण देवेश सम्पद् सर्वार्थ साधक ॥

भगवन् भवदेव, शर्व देव. उग्रदेव. महादेव श्री वटुक इदंभैरव वोऽर्घ्यं नमः। ब्रह्मन् कलश देवताः इदं वोऽर्घ्यं नमः। तेज-चण्ड समस्त शिवरात्रि देवताः इदं वोऽर्घ्यं नमः।

अब शुद्ध जल से देवताओं को आचमन देवे और पढ़िये।

त्रिपुरान्तक दीनार्तिनाश श्रीकण्ठतुष्टये।
गृहाणाचमनं देव पवित्रोदककल्पितम् ॥

भगवते भवायदेवाय शर्वाय देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय श्री वटुक भैरवाय, ब्रह्मणे कलश देवताभ्यः। तेजाय-चण्डाय श्री शिवरात्रि-देवताभ्यः आचमनीयं नमः

अब सब देवताओं को स्नान कराना है, सर्वप्रथम केवल शुद्ध जल से स्नान करवाये, और पढ़िये :-

त्रिकाल काल कालेश संहार करणोद्यत ।
स्नानं तीर्थाहृतैः तोयैः गृहाण परमेश्वर ॥

भगवते भवादेवाय। पार्वतीसहिताय परमेश्वराय श्री वटुक भैरवाय। ब्रह्मणे कलश देवताभ्यः। तेजाय चण्डाय समस्त शिवरात्री देवताभ्यः मन्त्रस्नानीयं नमः

अब देवताओं को पञ्चदश स्नान करना है, इसके लिए किसी बडे पात्र में जल रखे, और उस में दूध-दही-घी-तिल-चावल-पुष्प-धूप भस्म-सर्षप और बेर आदि डाले, अब इसी जल को प्रणीतपात्र (अर्घ्य) या किसी छोटे पात्र से वटुक-भैरव, रामगड्डू और सन्य-पुतलू या शिव मूर्ति पर डालते जाइये, और यह पढ़ते रहिए (सम्भव हो, बायें हाथ से घण्टा बजाते रहिए, और दायें हाथ से स्नान जल डालते जाइये।)

१. असंख्यातः सहस्राणि ये रुद्राः अधि भूम्याम् ।
तेषां सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ।
२. येस्मिन्महत्यर्णवेन्तरिक्षेभवाअधि ॥ तेषां सहस्रयोजनेव धन्वानि०
३. ये नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवं रुद्रा उपश्रिताः ॥ तेषां सहस्र०
४. ये नीलग्रीवा शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः ॥ तेषां०
५. ये वनेषु शिष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः ॥ तेषां सहस्रयोजनेव०
६. येऽन्नेषु विविध्यन्ति मात्रेषु पिवतो जनान् ॥ तेषां सहस्रयोजनेव०
७. ये भूताना मधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः ॥ तेषां सहस्रयोजनेव०

८. ये पथीनां पथिरक्षय ऐडमृडायव्युधः ॥ तेषां सहस्रयोजनेव धन्वानि
९. ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गणः ॥ तेषां सहस्रयोजनेव०
१०. य एतावन्तो वा भूयांसो वा दिशो रुद्रा वितिष्ठिरे ॥ तेषां सहस्र०
११. ॐनमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्ष मिषव स्तेभ्यो दश प्राचीर्दशदक्षिणा दश प्रतीची दशोदीची र्दशोर्ध्वा स्तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ।

ॐनमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये अन्तरिक्षे येषां वात मिषव स्तेभ्यो दशप्राची०
ॐनमो अस्तु रुद्रेभ्यों ये पृथिव्यां येषामन्न मिषव स्तेभ्यो दश प्राचीः दश दक्षिणा दश प्रतीची दशोदीची र्दशोर्ध्वा तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृडयन्तु तेयं द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥

१. यो रुद्रो अग्नौ योऽप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु ।
यो रुद्रो विश्वा भुवनाविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः॥
२. अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यश्च ।
सर्वथा शर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्र रूपेभ्यः ॥ ११ बार ।

नोट :- यदि समय आज्ञा देता हो, तो सम्पूर्ण रुद्रमन्त्र और चमानुवाक से बटुक भैरव को स्नान देवे ।

अन्त में :-

भगवते भवायदेवाय, शर्वायदेवाय, रुद्रायदेवाय, पशुपते देवाय उग्रायदेवाय, भीमायदेवाय, महादेवाय, ईशानदेवाय, पार्वतीसहितायपरमेश्वराय श्री बटुक-भैरवाय पञ्चदश स्नानानि नमः

महागणपतये, कुमाराय, श्रियं, सरस्वत्यै, ब्राह्मणे कलश देवताभ्यः (फाल्गुणे) शक्तिसहिताय चक्रिणे, क्रियासहिताय गोविन्दाय स्नानानि नमः । कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, रात्रिरात्र्यै, शिवरात्र्यै ।

पूर्वे – देवी-पुत्र वटुक नाथाय

आग्नेये – भूत बलेभ्यः उत्तरे – योगिनीबलेभ्यः ।

दक्षिणे – वेताल राजाय ईशाने – विश्वक् सेनाय

नैर्ऋतये– बहुखातकेश्वराय ऊर्ध्वे – जयक् सेनाय

पश्चिमे – स्थान क्षेत्रपालाय पाताले – तेजाय

वायव्ये – मगंल राजाय मध्ये – चण्डाय,

समस्त शिवरात्रि देवताभ्य :स्नानानि नमः ॥

सब को स्नान करने के पश्चात् जल से भरा प्रणीत पात्र (अर्घ्य) वटुक देवपर ॐ नमो देवेभ्यः यह पढ़कर चढ़ावे ।

कण्ठोपवीती

फिर गले में सीधा और दोनों अंगूठे में यज्ञोपवीत धारण कर एक और जल से भरा प्रणीतपात्र (अर्घ्य) स्वाहा-ऋषिभ्यः कहकर 'वटुक देव पर' चढ़ावे ।

अपसव्येन

तदनन्तर बाऐं-बाजू में यज्ञोपवीत धारण कर एक और जल से भरा प्रणीत पात्र यधापितृभ्यः पढ़ कर वटुक देव पर चढ़ावे

सव्येन

अन्त में फिर दाऐं बाजू में यज्ञोपवीत धारण कर तीन बार जल से भरा प्रणीत पात्र यह कहकर श्री वटुक भैरव पर चढ़ावे ।

आ ब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं ब्रह्माण्डं स चराचरं
जगत् तृप्यतु तृप्यतु - तृप्यतु-एवमस्तु ॥

सब के बाद फिर श्री वटुक देव (सन्य पुतलू) पर प्रणीत पात्र से (स्नान द्रव्यों का मैल मिटाने के लिए) तीन बार यह पढ़ते २ शुद्ध जल चढावे ।

ॐ नमः शिवाय वरदाय वटुक भैरवाय सदा शिवाय ॥३॥
शिवरात्रि देवताभ्यः मन्त्रगुढकं परिकल्पयामि नमः ॥

इसके अनन्तर भूतों और प्रेतों के निवारण के लिए पूजक अपनी बायीं हाथ की हथेली में थोडे से चावल और पानी रख कर सब देवताओं के उपर २ से आरात्रिका (आलत) निकाल कर अपने बायें कन्धे से दूर फेंके । साथ ही यह पढ़ते जाइये ।

गृह्णन्तु भगवद् भक्ता भूताः प्रासाद बाह्यगाः
पञ्च भूताश्च ये भूता स्तेषामनुचराश्चये ।
ते तृप्यन्तु वोषट् ॥ शिवरात्रि देवताभ्यः
आरात्रिकां परिकल्पयामि नमः ॥

फिर वटुक देव के चरणों के जल से अपने नेत्रों को यह पढते हुए स्पर्श करिये :

१. तेजोरूप महेशान सोमसूर्याग्निलोचन ।
प्रकाशय परतेजो नेत्रस्पर्शेन शंकर ॥
२. भगस्य हृदयं लिङ्गं लिङ्गस्य हृदयं भगः ।
तस्मै ते भगलिंगाय उमा रुद्राय वै नमः ॥

(शिवरात्रियाग देवताभ्यो नेत्रस्पर्शनं परिगृह्णामि नमः)

अब वटुदेव को रखने के स्थान को विचित्र फूलों और वस्त्रों से सजाते हुए पढिये :—

ॐ आसनाय नमः, पद्मासनाय नमः, प्रेतासनाय नमः, वृषभासनाय नमः, ज्ञानासनाय नमः, सिंहासनाय नमः, पीठा सनाय नमः, विचित्रवाहनासनाय नमः ॥

अब बटुकदेव को दोनों हाथों से उठा कर उसे क्षमा मांगते हुए सुसज्जित स्थान पर रखिये, सुगन्धित द्रव्यों और विचित्र फूलों से उसे सजाते हुए यह पढिये :-

१. उत्तिष्ठ भगवन् शम्भो उत्तिष्ठ गिरजापते
उत्तिष्ठत्रिजगन्नाथ त्रैलोक्ये मंगलं कुरु ॥

२. किमासनं ते वृषभासनाय, किं भूषणं वासुकि भूषणाय ।
वित्तेशभृत्याय किमस्तिदेयं, महेश किंते वचनीयमस्ति ॥

यहीं पर यथाकाश 'महिम्नः पार' और अन्य स्तोत्रादि पढ़कर भगवान का अनुलेपन (सजावट) करते रहिए ।

अब भगवान को वस्त्र पहिन लीजिए ।

कालाग्निरुद्र सर्वज्ञ वरदाऽभय दायक ।
वस्त्रंगृहाण देवेश दिव्य वस्त्रोपशोभित ।

(शिवरात्रि देवताभ्यः वस्त्रं परिकल्पयामि नमः)

बटुकदेव को यज्ञोपवीत पहिन ले ।

सुवर्णतारैः रचितं दिव्य यज्ञोपवीतकम ।
नीलकण्ठ मयादत्तं गृहाण मदनुग्रहात् ॥

(शिवरात्री देवताभ्यः यज्ञोपवीतं परिकल्पयामि नमः)

अब भैरवनाथ को यह पढ़ते हुए 'तिलक' लगाइये :—

सर्वेश्वर जगद्वन्द्य दिव्यासन सु संस्थित ।
गन्धं गृहाण देवेश दिव्यगन्धोपशोभितम् ॥

भगवते भवायदेवाय शर्वाय देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, श्री वटुक भैरवाय समालभनं गन्धोनमः । (कलशे) ब्रह्मणे कलश-देवताभ्यः समालभनं गन्धोनमः । तेजाय-चण्डाय समस्त शिवरात्री देवताभ्यः समालभनं गन्धोनमः ।

नोट :— भैरव नाथ को स्नान कराते समय जिन जिन नामों का प्रयोग किया है, पूजक उन सारे नामों का प्रयोग अब फिर तिलक लगाने, 'नाना रंग के फूल-चढाने, धूप और दीप समर्पण करने, तथा आरती उतारने के समय भी करे ॥

अब पूजक भक्ति के विचित्र फूल (बिल्वपत्र) चढ़ाते पढ़ते जाये ।

सदाशिव शिवानन्द प्रधान करुणेश्वर ।
पुष्पाणि बिल्वपत्राणि विचित्राणि गृहाण मे ॥

भगवते भवायदेवाय, शर्वाय देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, श्री वटुक भैरवाय सपरिवाराय सानुचराय अर्घोनमः पुष्पंनमः । (कलशे) ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः अर्घोनमः पुष्पं नमः । तेजाय-चडाय समस्त शिवरात्री देवताभ्यः अर्घो नमः पुष्पं नमः ।

अब परिवार के सारे व्यक्तियों के समेत पूजक धूप-दीप समर्पण करते हुए भगवान वटुक भैरव की आरती उतारें :-

पहिले धूप समर्पण करे :-

महादेव मृडानीश जगदीश निरञ्जन ।
धूपं गृहाण देवेश साज्यं गुग्गल कल्पितम् ॥

भगवते भवाय देवाय शर्वाय देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय श्री वटुक भैरवाय धूपं परिकल्पयामि नमः तेजाय-चण्डाय समस्त शिवरात्री देवताभ्यः धूपं परिकल्पयामि नमः ॥

अब रत्नदीप चढ़ाते पढिये :-

हिरण्यबाहो सेनानीरोषधीनांपते शिव ।
दीपं गृहाण कर्पूर कपिलाज्य त्रिवर्तिकम् ॥

भगवते भवाय, शर्वाय देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय, श्री वटुक भैरवाय रत्नदीपं कर्पूरं परिकल्पयामि नमः (कलशे) ब्रह्मणे कलश देवताभ्यः, तेजाय चण्डाय समस्त शिवरात्री देवताभ्यः श्री वटुक-भैरव देवतानां - सन्तोषणार्थं, आत्मनः शुभफलप्राप्त्यर्थं रत्नदीपं परिकल्पयामि नमः ।

अब सारे जन खड़े होकर श्री वटुक भैरव की आरती उतारें, और यह पढ़ते जाये :-

मयूरपुच्छैः देवेश शुभ्रैः चामरकैः तथा ।
ध्वजं छत्रं वीजनं च गृहाण परमेश्वर ॥

भगवते भवायदेवाय शर्वाय देवाय, उग्राय देवाय, महा देवाय श्री वटुक भैरवाय समस्तशिवरात्री देवताभ्यः चामरं परिकल्पयामि नमः ।

नोट :- पूजक सब व्यक्तियों सहित :-

१. जय सर्वजनाधीश०
२. व्याप्त चराचर भावविशेषं०
३. अतिभीषण कटु भाषण०
४. जय शिव ॐकार० इत्यादि

अपनी भक्ति से अनुस्यूत श्री गणेश जी तथा भगवती जगदम्बा के श्लोकों से आरती उतारे ।

आरती करने पर फूलों का छत्र वटुक देव पर लगाये ।

काराडात् काराडात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

शिवरात्री देवताभ्यः छत्रं परिकल्पयामि नमः ।

अब आईना (शीशा) दिखाते हुए पढ़िये :-

यस्य दर्शनमात्रेण विश्वं दर्पण बिम्बवत् ।
तस्मै ते परमेशाय मकुरं कल्पयामि-अहम् ॥

शिवरात्री देवताभ्यः आदर्श परिकल्पयामि ।

निर्माल्य में कुछ जल डालते जाइये :-

एताभ्यो देवताभ्यो धूपदीपात् संकल्पसिद्धिरस्तु धूपोनमः दीपोनमः

अब दोनों हाथ जोड़ के वटुकदेव से माफी मांगना ।

एतामसां शिवरात्री देवतानां मर्घ्यदानाद्यर्चन विधिः
सर्वः परिपूर्णोस्तु

माफी मांगने के बाद भगवान वटुकभैरव के घडे में दूध और चरु (कन्द) समर्पण करते पढ़िये :-

क्षीराज्यमधुसंमिश्रं शुभ्रदध्नासमन्वितम् ।
षड्रसैश्च समायुक्तं गृहाणान्नं निवेदये ॥

श्री वटुक भैरवाय शिवरात्री देवताभ्यो चरुं परिकल्पयामि नमः

अब दोनो हाथों से पुष्पाञ्जलि वटुकदेव पर समर्पण करे :-

हर विश्वाखिलाधार निराधार निराश्रय ।
पुष्पाञ्जलिमिमं शम्भो गृहाण वरदो भव ॥

श्री वटुकदेवाय पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि नमः

नारियल आदि फल भेंट चढ़ाते हुए पढिये :

राजराजाधि देवेश निराधार निरास्पद ।
फलं गृहाण मद्दत्तं नारिकेलादिकं शुभम् ॥

श्री वटुक देवाय फलं समर्पयामि नमः-

अब ताम्बूल भेंट करते पढिये :-

शाश्वतात्मन् महानन्द मदनान्तक धूर्जटे ।
गृहाण पूगताम्बूल दलपत्रादि संयुतम् ॥

श्री वटुक भैरवाय ताम्बूलं समर्पयामि नमः ।

अन्त पर वटुक भैरव की मानसिक भाव से "अर्धप्रदक्षिणा" करके पुष्पाञ्जलि समर्पण करे :-

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्ति शिवस्यार्ध प्रदक्षिणात् ॥

ॐ नमो भैरवेश वटुक भैरव सानुग भगवन् प्रसीद ॥

इस के बाद 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्राक्षरों से वटुकदेव पर क्षमापुष्प लगाते पढिये :-

न - नागेन्द्रहराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
देवाधिदेवाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ।

मः - मातङ्गचर्माम्बरभूषणाय समस्त गीर्वाणगणार्चिताय ।
त्रैलोक्य नाथाय पुरान्तकाय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ॥

शि - शिवामुखाम्भोज विकासनाय दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय
चन्द्रार्कवैश्वानर लोचनाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥

वा - वसिष्टकुम्भोद्भव गौतमादि मुनीन्द्र वन्द्याय गिरीश्वराय ।
श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥

य - यज्ञस्वरुपाय जटाधराय पिनाक हस्ताय सनातनाय ।
नित्याय शुद्धाय निरञ्जनाय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ॥

इस प्रकार पञ्चाक्षरस्तोत्र तथा अन्यान्य भक्तिभावपूर्ण स्तोत्रादि पढ़कर दोनों हाथ जोडकर अष्टाङ्ग प्रणाम करिये, और पढिये :-

मृडानीशाद्य मे स्वामिन् अपराधान् अनेकशः ।
क्षम स्वामिन् प्राणामं मे गृहाणाष्टाङ्ग संयुतम ॥

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा मनसा वचसा च नमस्कारं करोमि नमः ॥

पूजा में किसी प्रकार की कहीं कमी न हुई हो, उसके लिए वटुक भैरव से हाथ जोड़ कर क्षमा मांगना ।

अन्नं नमः २ आज्यं २ अद्यदिने अद्ययथा संकल्पात् सिद्धिरस्तु-अन्नहीनं-क्रियाहीनं-विधिहीनं--द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं च यद्गतं तत्सर्वं मच्छिद्रं सम्पूर्णमस्तु एवमस्तु ।

अब अन्त पर सपरिवार श्री वटुक देव को पहिले आचमन से तृप्त कर फिर उसके साथ ही अपनी श्रद्धानुसार कुच्छ दक्षिणा भेंट करे :-

आचमन का जल

'शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्त्रवन्तुनः'

इस मन्त्र से किसी पात्र में भर ले, फिर

भगवते भवाय देवाय श्री वटुक भैरवाय अपोशानं नमः । (कलशे) ब्रह्मणे कलश देवताभ्यः अपोशानं नमः तेजाय-चण्डाय समस्त देवताभ्यो अपोशानं अमः

कहकर सब पर जल डालते जाइये ।

तदनन्तर फिर "शनो देवी रभि०" मन्त्र से किसी पात्र में जल भर लीजिये, और उसी में सब की दक्षिणा डालते तो पहिले

"भगवते भवायदेवाय श्री वटुक भैरवाय, दक्षिणायै तिल हिरण्यंरजत निष्कर्णददानि ।
फिर ब्राह्मणे कलश-देवताभ्यः, दक्षिणायै० तेजाय चण्डाय शिवरात्रि देवताभ्यः दक्षिणायै तिल हिरण्यंरजत निष्कर्ण ददानि ।

इच्छानुसार यथाशक्ति दक्षिणा भेंट कर । फिर इसके साथ ही एक एक सिक्का प्रत्येक को दक्षिणा के समान—

"एता देवताः सदक्षिणाऽनेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु"

पढ़कर जल समेत सिक्का उठाकर केवल सामने सिक्का छोड़े, और जल से अपने मुंह को छिडकावे ।

फिर अन्त में कलश पर दो बार दो फूल इस मन्त्र से चढावेः-

ॐ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम् तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोः यत् परमं पदम् ।

नाथं नाथं त्रिभुवन नाथं भूतिसितं त्रिनयनं त्रिशूल धरम् ।
उपवीतीकृतभोगिन-मिन्दुकलाशेखरं वन्दे ॥

करकलितकपालकुण्डलीदण्डपाणिः
तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती
क्रतु समय सपर्या विघ्न विच्छेद दक्षो
जयति वटुक नाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

नोटः- कश्मीर में कई घरानों की यह रीति है, कि वे वटुक देव का पूजन करके "वैश्वदेव विधि" से (भूमण्डल के भूतादिकों और अपने पितरों का अष्टाङ्ग अन्न से तृप्त करते है) फिर वटुकनाथ को नैवेद्य समर्पण करते है। उनके लिए वैश्वदेव विधि इसी पुस्तक के अन्त में संगृहीत है, अवश्य देखें,

अब प्रिय परिवार समेत अपनी अपनी कुल रीति अनुसार श्री वटुक नाथ को नैवेद्य समर्पण करने की विधि इस प्रकार है :-

सर्व साधारण विधि से नैवेद्य (सब प्रकार का पकाया हुआ भोजन, चावल की रोटियां, पापड आदि) ३ थालियों में लाइये :- जिन में :

१. एक थाली—जो सारे प्रिय परिवार की ओर रखी जाती है
२. दूसरी थाली–जो समस्त शिवरात्रि देवताओं (योगिनियों) के लिए है, डलू में जो भेंट किया जाता है, जिन पर अपनी २ रीति के अनुसार अन्य वस्तुएँ (सप्तसस्य आदि भी) रखी जाती हैं।
३. तीसरी थाली – जो सब क्षेत्रपालों के लिए है जिसे दोनों सन्यवारियों को भेंट करना है

(इस तीसरी थाली के भोग को ३ भागों में बांट करके रखिये)।

अब इन में पहली थाली को घर के सब व्यक्ति श्रद्धा पूर्वक हाथ से थामते रहिए और पूजक इस प्रकार नैवेद्य मन्त्र पढते जायें :-

(बायें हाथ से घण्टा बजाते जाइये)

अथ नैवद्य मन्त्रः

अमृतेशमुद्रया, अमृतीकृत्य, अमृतमस्तु अमृतायतां नैवेद्यं सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोः बाहुभ्यां पुष्णो हस्ताभ्या मादधे। महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वादेवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश देवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वर-देवताभ्यः चातुर्वेश्वराय, सानुचराय, ऋतुपतये नारायणाय, फाल्गुणे' शक्ति सहिताय चक्रिणे क्रिया सहिताय गोविन्दाय, दुर्गायै, त्र्यम्बकाय वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वातादिभ्यः पितृगण देवताभ्यः, काल-रात्र्यै, तालरात्र्यै, राक्षिरात्र्यै, शिवरात्र्यै, तेजाय चण्डाय, समस्त-शिवरात्री-देवताभ्यः भगवते वासुदेवाय गोविन्दाय सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मी सहिताय नारायणाय। भगवते भवादेवाय शर्वाय देवाय उमा सहिताय शिवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय, भगवते विनाय-काय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय, वल्लभा-सहिताय श्री महागणेशाय, भगवते क्लीं कां कुमाराय, षण्मुखाय, सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय, प्रत्यक्षदेवाय, परमार्थसाराय प्रभासहिताय आदि-त्याय। भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्गै, श्री शारिका भगवत्यै श्री महाराज्ञी भगवत्यै, श्री ज्वालाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुर सुन्दर्यै, सहस्रनाम्न्यै-देव्यै-भवान्यै, इह राष्ट्राधिपतयेअमुक भैरवाय, इन्द्राय वज्रहस्ताय, अग्नये शक्तिहस्ताय, यमाय दण्ड हस्ताय, नैऋतये खड्गहस्ताय, वरुणाय पाशहस्ताय, वायवे ध्वज़ हस्ताय, कुबेराय गदाहस्ताय, ईशाणाय त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे-पद्म हस्ताय विष्णवे चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्यः, अष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः। अग्न्यादि-

त्याभ्यां, वरुणचन्द्रमोभ्यां, कुमार भौमाभ्यां, विष्णुबुधाभ्यां, इन्द्रा-बृहस्पतिभ्यां, सरस्वती शुक्राभ्यां, प्रजापति शनैश्चराभ्यां, गणपति-राहु-भ्यां, रुद्रकेतुभ्यां, ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्ता-गस्त्याभ्यां, ब्रह्मणे, कूर्माय, ध्रुवाय शिख्यादिभ्यः पञ्च चत्वारिंशद् वास्तोष्पति देवताभ्यः, ब्रह्मा-दिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्र गणेश देवताभ्यः राका देवताभ्यः, त्रिकादेवताभ्यः, सिनीवाली देवताभ्यः यामी देवताभ्यः, रौद्री देवताभ्यः, वारुणी देवताभ्यः, बार्हस्पत्य देव-ताभ्यः ॐ भूः देवताभ्यः ओं भुवः देवताभ्यः, ओं स्वः देवताभ्यः ओं भूर्भुवः स्वः देवताभ्यः, अखण्ड-ब्रह्माण्ड-याग-देवताभ्यः, धूर्यः, उपधूर्यः महागायत्र्यै, सावित्र्यै सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वटुकादिभ्यः ।

उत्पन्नममृत दिव्यं प्राक्क्षीरोदधि मन्थनात् ।
अन्नममृतरूपेण नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथावद्य फाल्गुणमासस्य कृष्णपक्षस्य त्रयोदश्यां — वारान्वितायां श्री वटुकदेवता सन्तोषणार्थं आत्मनः शुभफल प्राप्त्यर्थं श्री शिवरात्री व्रतनिमित्तं ओं नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः

(सब गृहजन थाली को थामना अब छोड दे)

अब पूजक की दम्पति (पति-पत्नी) दोनों दूसरी थाली को दोनों हाथो से थामते हुए निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करें, और फिर योगिनियों के समर्पण करें (डुलू में छोडे)

ये विश्वभाविनो भूताः येच तेष्वनुयायिनः ।
आहरन्तु बलिं तृप्ताः प्रयच्छन्तु शिवं मम ॥

पूर्वे—ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुक भैरवाय, कपिल जटाजूट भार भास्व-राय, त्रिनेत्राय, ज्वालामुखाय, आग्नेये-भूत बलेभ्यः, दक्षिणे अग्नि

वेताल राजाय, नैऋते-बहुखातक श्वराय, पश्चिमे-स्थान क्षेत्रपालाय, वायव्ये-मंगल राजाय, उत्तरे-योगिनी बलेभ्यः, ईशाने-विश्वक्सेनाय, ऊर्ध्वे-जयक्सेनाय, पाताले-तेजाय, मध्ये-चण्डाय कालरात्र्यै तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै समस्तशिवरात्रि योगिनीभ्यः सुमन्त्रि पुष्प-दीप-धूप नानाविध भक्ष्यभोज्य अलिवलि पिशितादि बलिं समर्पयामि वौषट् ।

नोट : उपरोक्त मन्त्र पढ़ते २ योगिनियों को (डुलू से) सारा अन्न भैट करे, और अन्त में थाली में कुच्छ पानी भी डालिये, वह भी डुलू को भेंट करें ताकि थाली में कुच्छ शेष अन्न न रहे ।

अब तीसरी थाली को सामने लाइये, इसके ३ भागों में प्रथम भाग को निम्न लिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पक्षियों के समर्पण करे ।

या काचित् योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा ।
खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवतु मे सदा ॥
आकाश मातृभ्यो बलिं समर्पयामि नमः ।

तिलक और फूल इस पर लगाइये :

आकाश मातृभ्यो समालभनं गन्धो नमः अर्घोनमः पुष्प नमः

अन्य दोनों भागों को हाथ से थाम कर और यह मन्त्र पढ़ कर दोनों क्षेत्रपालों (सन्य वारियों) के समर्पण करें :

येऽस्मि निवसते क्षेत्रे क्षेत्रपालाः स किंकराः
तेभ्यो निवेदयाम्यद्य वलिं पानीय संयुतम्
क्षां क्षेत्राधिपतिभ्यो बलिं समर्पयामि नमः ।
रां राष्ट्राधिपतिभ्यो बलिं समर्पयामि नमः ।

अन्त में दोनों में चावल मिश्रित जल इसी थाली से छोडते हुए पढिये ।

सर्वे क्षेत्रपाला अभयवरप्रदा मह्यं पुष्टिं पुष्टपतयो ददतु ॥

इस प्रकार सब भैरवों को बलि से तृप्त करके पूजक फिर हाथ में दर्भ के दो काण्ड लेकर सब देवों का विसर्जन करे, और नैवेद्य को खाने की आज्ञा मांगे :

(आवाहन की तरह विसर्जन भी करे)

ॐ भूः पुरुषं विसर्जयामि नमः

ॐ भुवः पुरुषं विसर्जयामि नमः

ॐ स्वः पुरुषं विसर्जयामि नमः

ॐ भूर्भुवः स्वः पुरुषं विसर्जयामि नमः

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितु वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्राय विद्महे-क्षेत्रेश मुख्याय धीमहि तन्नो वटुक-भैरवः प्रचोदयात्

तत् सद् ब्रह्म अद्यतावत् तिथावद्य फाल्गुण मासस्य कृष्णपक्षस्य त्रयोदश्यां - वारान्वितायां महागणपतये कुमारस्य श्रियः-सरस्वत्यः-लक्ष्म्यः-ब्रह्मणः कलशदेवतानां ब्रह्म-विष्णु-महेश्वर देवतानां, कालरात्र्याः, तालरात्र्याः, राज्ञिरात्र्याः-शिवरात्र्याः, तेजस्य, चण्डस्य, समस्त शिवरात्री देवतानां, शिवरात्री व्रत निमितं कलश पूजनं क्षेत्रेश्वर-पूजनं शिवरात्री-पूजनं अच्छिद्रं सम्पूर्णमस्तु एवमस्तु ।

अब थोड़ा सा जल निर्माल्य में डालते हुए पढिये :-

एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः उदक तर्पणं नमः ॥

अब दोनों हाथों में फूल रख कर सब देवों से क्षमा प्रार्थना करते हुए श्रद्धा के फूल सब पर लगाते जाइये, और पढते जाइये :-

१. आज्ञां मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे ।
शरीर यात्रा सिद्धयर्थं भगवन् क्षन्तु मर्हसि ॥

२. आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा ।
भगवन् त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम् ॥

३. क्षमध्वं ममक्षेत्रेशा ददध्वं सुख सम्पदः ।
खगो पाताल दिक्संस्थाः तुष्टा यान्तु स्वकं पदम् ॥

४. आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम् ।
पूजा भागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर ॥

(सब को अष्टाग प्रणाम करे)

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा चोरसा वचसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः

अन्त में आगेलिखित मन्त्र से निर्माल्य में जल डाल कर सब गृहजनों का अवशेष जल से अभिषेक करें :

सहनोऽवतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै
तेजस्विनावधीतमस्तु माविद्विषावहै ॐ शान्तिः ३॥

(सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः)

सब के अंत में पूजक कलश के विष्टर से कलश के जल की छोटें सब गृहजनों को देवे, और शगुन के रूप में कलश के फूल उनके हाथ में समर्पण करे, और यह पढते जाये ।

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणामुदयस्तव ।
आयु-रारोग्य मैश्वर्य मेतत्त्रितयमस्तु ते ।
जीवत्वं शरदः शतम् ॥

(अन्त में सब मिल कर वटुकदेव से प्रार्थना करें ।)

१. पूजितोसि मया भक्त्या भगवन् गिरिजापतेः ।
स गौरीको मम स्वान्तं विश विंश्रान्ति हेतवे ॥

२. आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिः स्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥

३. करचरण कृतं वाक् कायजं कर्मजं वा
श्रवण नयनजं वा भानसं वापराधम् ।
विदित मविदितं वा सर्व मेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो ॥

४. मनस्यान्तर्मतं मन्त्रं मन्त्रस्यान्तर्गतं मनः ।
मनो मन्त्रमयं दिव्यमेक पुष्पं शिवार्चनम् ॥

इति शिवरात्रि विधि :

नोट :- शिवरात्रि के दिन पूजक कलश में से सब जनो को केवल फूल ही देवें, अखरोट आदि नहीं, हां कुल रीति से तीसरे या चोथे दिन जब वटुक देव का विसर्जन करते हैं (दुब दुब करते हैं) उसी दिन पहिले कलश के जल की छींटें सब को देवें, और उसी के अखरोटों का नैवेध करें, फिर अन्य पात्रों के अखरोटों का प्रसाद बांटे ॥

अथ शिवचामर - स्तोत्रम्

जय सर्व जना धोश जय गौरीपते शिव ।
जय देव महादेव जय गङ्गाधरेश्वर ।
जय दग्ध पुराध्यच्त जय कालान्त कारक
जय काम विरामेश जय भक्तानुकम्पक ॥१॥
जय त्रैलोक्य संरक्षिन् जय निर्गुण सद्गुण
जयानन्त गुणारम्भ जय घोर महेश्वर
जय चन्द्रकलाक्रान्त जय नागेन्द्र भूषण
जय पुङ्गव सत्केतो जय त्र्यक्ष महेश्वर ॥२॥
जयान्तक रिपो शम्भो जय ब्रह्मादि कारण
जय पञ्चकलातीत जय शूलिन् कपालभृत्
जयोपेन्द्रेन्द्र चन्द्राद्य जय नन्दादि वन्दित
जयानेक गणाधीश जय स्वमिन् महेश्वर
जय विश्वाद्य विश्वेश जय विश्वैक कारण
जय विश्वसृजां मुख्य जय विश्वस्यं सद्गुरो ॥
जय निरामय जय सुधामय जय धृतामृत दोधिते
जय हतान्तक जय कृतान्तक जय पुरान्तक सद्व्रते ।
जय परापर जय दयापर जय नतार्पित सद्व्रते
जय जितस्मर जय महेश्वर जय जय त्रिजगत्पते ॥

अथ क्षमापन - स्त्रोत्रम्

१. अतिभीषण कटुभाषण यमकिंकर पटली-
कृततादन परिपीडन मरणागम समये ।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्-
शिव शङ्कर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ।१।

२. अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु सञ्चय दलिते
पवि कर्कश कटु जल्पित खल-गर्हण चलिते ।
शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्
शिव शङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ।२।

३. भवभञ्जन सुर-रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्
दनुजान्तक मदनान्तक रविजान्तक भगवन् ।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्
शिव शङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ।३।

४. शक्रशासन क्रतुशासन चतुराश्रम विषये
कलि विग्रह-भवदुर्ग्रह-रिपुदुर्वल समये ।
द्विज क्षत्रिय वनिताशिशुदर कम्पित हृदये
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ।४।

५. भव संभव विविधामय परिपीडित वपुषं
दयितात्मज ममताभर कलुषीकृत हृदयम् ।
कुरु मां निज चरणार्चन निरतं भव सततम्
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ।५।

अथ प्रार्थना स्त्रोत्रम्

१. गौरीविलास भुवनाय महेश्वराय पंचाननाय शरणागत कल्पदाय ।
शर्वाय सर्वजगता मधिपाय तस्मै दारिद्रदुःख दहनाय नमः शिवाय ॥
२. विश्वेश्वराय नरकार्णवतारणाय-ज्ञानप्रदायकरुणामृत सागराय ।
कर्पूर कुन्द धवलेन्दुजटाधराय दारिद्र्यदुःख दहनाय नमः शिवाय ॥
३. गौरी प्रियाय निशिराजकलाधराय लोकान्तकाय भुजगाधिप
कङ्कणाय ।
गङ्गाधराय जलदानव मर्दनाय दारिद्र्यदुःख दहनाय नमः शिवाय ॥
४. भानुप्रियाय भवसागर नाशकाय कामान्तकाय कमलाप्रिय पूजिताय
नेत्रत्रयाय शुभलक्षण लक्षिताय दारिद्र्यदुःख दहनाय नमः शिवाय ॥
५. पञ्चाननाय फणिराज विभूषणाय स्वर्गापवर्गफलदाय विभूतिदाय
हैमांशुकाय भुवनत्रयवन्दिताय दारिद्र्यदुःख दहनाय नमः शिवाय ॥
६. भक्तिप्रियाय भवरोग भयापहाय दिव्याय दिव्य वसनाय गुणार्णवाय
तेजोमयाय सकलार्थद संस्थिताय दारिद्र्यदुःख दहनाय नमः शिवाय ॥
७. रामप्रियाय रघुनाथ वरप्रदाय नाथप्रियाय नगराज सुताप्रियाय
पुण्याय पुण्य चरिताय सुरार्चिताय दारिद्र्यदुःख दहनाय नमः शिवाय
८. चर्माम्बराय चितिभस्मविलेपनाय भालेक्षणाय मणिकुण्डल मण्डिताय
मञ्जीर पाद युगलाय वृषध्वजाय दारिद्र्यदुःख दहनाय नमः शिवाय
९. मुक्ताय यज्ञ फलदाय गणेश्वराय गीतप्रियाय वृषभेश्वर वाहनाय
मातंगचर्मवसनाय महेश्वराय दारिद्र्यदुःख दहनाय नमः शिवाय ।

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमत् शङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥
तव तत्वं नजानामि कीदृशोसि महेश्वर ।
यादृशोसि महादेव तादृशाय नमोनमः ॥

श्री शिवः प्रीयताम्

अथ वैश्वदेव विधिः

(अग्निं प्रज्वाल्य) सर्व प्रथम अग्नि को प्रज्वलित करे, फिर उसके 'ईशान कोण' याने अग्नि के सामने उसके साथ ही अपनी दाई ओर प्रणीत पात्र (अथवा) कोई छोटा पात्र रखे उसमें जल, दर्भ का विष्टर चावल और फूल ड़ाले, अब हाथ में थोड़े से तिल रखकर उन्हें अग्नि और इसी पात्र में ड़ालते हुए यह पढते रहिए :-

पात्रं तिलाक्षतै मिश्रं कुसुमोदक विष्टरैः ।
अग्नेश्चैशान् दिग्भागे प्रणीत मभिधीयते ।
प्रणीतं नैऋते स्थाप्य स विष्णुः नात्र संशयः ॥

अब नीचे के ३ मन्त्रों से इसी में ३ बार फूल डालिये,

१. 'संव्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः
२. संसृष्टा स्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु नः
३. सं य्यावः प्रिया स्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः
आत्मा वो अस्तु संप्रियाः संप्रिया स्तन्वो मम ॥

इस शुभ कार्य में कोई बाधा न आवे, उसके निवारण के लिए प्रज्वलित अग्नि में से दर्भ के दो काण्ड जलाकर अपनी दाई-तरफ फेंकते हुए यह पढते रहिए ।

निर्दग्धं रक्षो निर्दग्धाराति रपाग्ने । अग्नि मामादं जहि
निष्क्रव्यादं सीधा देव यजनं वह । प्राणायामं कुर्यात् ॥

(अब प्राणायाम करें)

फिर इसी पात्र के जल से इसी के विष्टर द्वारा प्रज्वलित अग्नि को नौ बार छिड़के देते हुए पढिये :-

१ ऋतं त्वा सत्येन परिसमूह्यामि
२ सत्यं त्वर्तेन परिसमूह्यामि
३ ऋत सत्याभ्यां त्वा परिसमूह्यामि
४ ऋतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि
५ सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि
६ ऋत सत्याभ्यां त्वा पर्युक्षामि
७ ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि
८ सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि
९ ऋत सत्याभ्यां त्वा परिषिञ्चामि

अब इसी अग्नि के चारों ओर दर्भ के ४ काण्ड फेंकते हुए पढ़िये:

यज्ञस्यसन्ततिरसि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै स्तृणामि ।
पुरस्तात्, दक्षिणतः, उत्तरतः, पश्चात् इति स्तरैः ॥

प्रज्वलित अग्नि को अब पूर्ण भक्ति से तिलक और पुष्प डालते हुए पढिये :

ज्वालामण्डितमाकाशं साक्षमालाकमण्डलुम्
त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रं च होमकाले तु चिन्तयेत् ।
शुकपृष्टगतं देवं शक्तिहस्तं चतुर्भुजम्
मृगाजिनेन सन्नद्धं पुष्पवर्णं हुताशनम् ॥
अग्नये शुकारूढाय स्वाहा सहिताय पावकाय त्रिनेत्राय
तेजोरूपायसमालभनं गन्धोनमः, अर्घोनमः पुष्पंनमः ।

इस प्रकार अग्निदेव की पूजा करके, अब वैश्वदेव के लिए चाहे चावल हो या रोटियां, लाइये, उन्हे घृतधारा से सिञ्चित करें फिर अग्नि में जलाये दो दर्भ काडे से इसे अभिमन्त्रित करे :-

और पढिये :-

वैश्वदेवस्य सिद्धस्य सर्वतोऽग्नस्य अन्नस्य जुहोति
पाकस्य घृतेन संलिप्य स्वस्त्यस्तु श्रृतमभिघार्य ।

अब इसके छोटे २ टुकड़े या लुकमे उठाकर, पहिला लुकमा अग्नि में उत्तर की ओर 'अग्नये स्वाहा' पढकर डालिये, और दूसरा दक्षिण की ओर 'सोमाय स्वाहा' कहकर डालिए, अन्य सब अग्नि के मध्य में आहुति देते हुए पढिये :-

मित्राय स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा, इन्द्राग्निभ्यां ०, विश्वेभ्यो-देवेभ्यः ०, प्रजापतये ०, अनुमत्यै ०, धान्नतरये ०, वास्तोष्पतये ०, वासुदेवाय ०, सङ्कर्षणाय ०, प्रद्युम्नाय ०, अनिरुद्धाय ०, सत्याय ०, पुरुषाय ०, अच्युताय ०, माधवाय ०, गोविन्दाय ०, गोपालाय स्वाहा, सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मी सहिताय नारायणाय स्वाहा ॥

अब इन में से कुछ टुकडे हाथ में रखे, और—

"सावित्राणि, सावित्रस्य, देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां मादधे, वैश्वदेव पूर्वकं नित्यकर्म याग देवताभ्यो नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः" पढकर इसे नैवेद्य के साथ रखिए।

(अब भूतगणों को तृप्त करना है, इसे अन्नकण कहते है इसके लिए अग्नि के पास ही अपने दाई ओर दर्भ के कुछ तिनके, जिनका सिरा पूर्व दिशा की ओर हो, भूमि पर बिछावे, इन्ही पर रोटियों के टुकडे या चावल के लुकमें, दाये से बायें, फिर बायें से दायें नीचे से प्रारम्भ कर उपर सिरे तक पंक्ति में ३ लुकमें रखते जाइये) यहां तक ३६ लुकमें बन पड़े।

[मन्त्र पढते जाइये]

1 तक्षाय नमः, 2 उप तक्षाय नमः, 3 अम्बा नामासि नमस्ते, 4 दुला नामासि नमस्ते, 5 नितन्त्री नामासि नमस्ते, 6 चुपनीका नामासि नमस्ते, 7 अभ्रयन्ती नामासि नमस्ते, 8 मेघयन्ती नामासि

नमस्ते, [9] वर्षयन्ती नामासि नमस्ते, [10] नन्दिनि नमस्ते, [11] सुभगे नमस्ते, [12] सुमङ्गलि नमस्ते, [13]भद्रङ्करि नमस्ते, [14]श्रियै हिरण्य केश्यै नमः, [15] वनस्पतिभ्यो नमः, [16] धर्माय नमः, [17] अधर्माय नमः, [18]मृत्यवे नमः, [19]मरुद्भ्यो नमः, [20]वरुणाय नमः, [21]विष्णवे नमः, [22] वैश्रवणायराज्ञे नमः, [23] भूतेभ्यो नमः, [24] इन्द्राय नमः, [25] इन्द्र पुरुषेभ्यो नमः, [26]यमाय नमः, [27]यम पुरुषेभ्यो नमः, [28]सोमाय नमः [29] सोम पुरुषेभ्यो नमः, [30] वरुणाय नमः, [31] वरुण पुरुषेभ्यो नमः, [32] ब्रह्मणे नमः, [33] ब्रह्म पुरुषेभ्यो नमः, (ऊर्ध्वं) [34]आकाशाय नमः, [35] (स्थण्डिले) दिवा चरेभ्यो भूतेभ्यो नमः, [36] नक्तञ्चरेभ्यो भूतेभ्यो नमः, तच्चादिभ्यः षट्त्रिंशद् देवताभ्यो अन्नं नमः

[सब पर थोडा सा जल छिडकाते हुए पढिये]

तच्चादिभ्यः षट् त्रिंशद् देवताभ्यः आचमनीयं नमः ॥

इस प्रकार भूमण्डल में वर्तमान सब भूतगणों को अपना २ भाग देकर अब सब पितर वर्ग को भी तृप्त करना यथेष्ट है, उसके लिए सर्व प्रथम **'अप सव्येन'** बाऐ बाजू में यज्ञोपवीत धारण करे, फिर अन्नकणों के नीचे अपने दाई ओर दर्भ के कुछ तिनके, जिनका सिरा दक्षिण की ओर हो, भूमि पर बिछावे, उनपर तिल मिश्रित जल **(तिलोदकेन अवने जनं स्वधा)** कहकर छिडकावे, तदनन्तर दूध दही, तिल, पानी, शहद और घी से परिप्लुत अन्न (चावल हो या रोटियां) तैयार करें, परं दीप और धूप जलता रहे (इसे अष्टाङ्ग अन्न कहते है) **(वाम जानुं भूमौ निधाय)** अपने बाये घुटने को जमीन पर रखकर इसी अष्टाङ्ग अन्न में से थोडा सा लुकमा उठाकर

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ।
नमः स्वधा च स्वाहा च नित्यमेव भवन्त्विह ।।

यह मन्त्र पढे, तदनन्तर तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत्तिथावद्य फाल्गुण मासस्य कृष्ण पक्षस्य तिथौ (द्वादश्यां वा त्रयोदश्यां) [दिन का नाम लेकर] वासरान्वितायां पितः (गोत्र के समेत पिता जी का नाम लेकर) "एतत्तेऽन्नं येच त्वाऽनु" दर्भ पर यह लुकमा रखिये।

पितामह [दादे का नाम लेकर]
एतत्तेऽन्नं येचत्वाऽनु पढकर पिता के लुकमे के साथ ही रखे।
प्रपितामह [पर दादे का नामलेकर] एतत्तेऽन्नं येचत्वाऽनु पढकर दादे के साथ रखे (इस प्रकार तीन की एक पंक्ति हो गई)
अब इसी प्रकार तीन ३ की पंक्ति बनाते जाइये :
मातः [माता जी का नामलेकर] एतत्तेऽनं याश्चत्वाऽनु (दूसरी पंक्तिमें रखे)
पितामहि [दादी का नाम लेकर] ,, ,, (दूसरे नं० पर रखे)
प्रपितामहि [पर दादी का नाम] ,, ,, (तीसरे नं० पर रखे)
मातामह [नाने का नाम लेकर] एतत्तेऽन्नं येचत्वाऽनु (तीसरी पंक्ति में)
प्रमातामह [परनाने का नाम] ,, ,, (दूसरे नं० पर)
वृद्ध प्रमातामह [परपडनाने का] ,, ,, (तीसरे नं० पर)
मातामहि [नानी का नाम लेकर] एतत्तेऽन्नं याश्चत्वाऽनु (चोथी पंक्ति में)
प्रमातामहि [परनानी का नाम] ,, ,, (दूसरे नं० पर)
वृद्ध प्रमातामहि [परपड़नानी का] ,, ,, (तीसरे न० पर)

इस प्रकार अन्य सम्बन्धियों को भी नाम और गोत्र लेकर अष्टाङ्ग अन्न से संतृप्त करे। अन्त में :-

समस्त मातापितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्यः अन्नं स्वधा २

पढ़कर बाकी अन्न भी छोड़े, और हाथ धोले। फिर अंगूठे से सब पर "समस्त मातृ पितृभ्यः समालभनं गन्धः स्वधा" पढकर तिलक लगाये। "अर्घ्यःस्वधा, पुष्पं स्वधा" पढकर फूल लगावे, 'दीपःस्वधाः धूप-स्वधा'

पढकर थोड़ा जल छोडे। 'भक्ष्य भोज्य-फल मूल बलि नैवेद्यमाहारादि अन्नं स्वधा' कहकर फलमूल आदि रोटियां उन्हे अर्पण करे, फिर तिल और शहद मिलाकर पानी से 'तिलमधुमिश्रमुद्रकपात्र माचमनीयं जलं स्वधा' कहकर सब पर आचमन का जल डाले। अन्त में दूध, दही, शहद चावल और तिल मिलाकर जल से सबका तर्पण करते पढे समस्त माता पितृभ्यः हिमपानं स्वधा, क्षीर पानं स्वधा, मधुपानं स्वधा तिलोदकं स्वधा, उदकतर्पण स्वधा हिमं २ रजतम् २ फिर सव्येन दायें बाजू में यज्ञोपवीत धारण कर (६ ऋतुओं के नाम लेकर) वसन्ताय नमः, ग्रीष्माय नमः, वर्षाभ्यो नमः, शरदे नमः, हेमन्ताय नमः, शिशिराय नमः, षड्ऋतुभ्यो नमः, ओर तर्पण करे। फिर रोटी का एक टुकडा अग्नि में 'अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा' कहकर अग्नि में ड़ालिये, हाथ धोले और फिर प्राणायाम करे।

अन्त में अग्नि को विसर्जन-निमित्त प्रणीत पात्र में से पहिले की तरह तीन बार विष्टर से जल छिडकते पढिये।

१] ऋतंत्वा सत्येन विमुञ्चामि २] सत्यं त्वर्तेन विमुञ्चामि
३] ऋत सत्याभ्यां त्वा विमुञ्चामि ।

साथ ही अग्नि के चारों ओर छोड़े दर्भ के चार तिनके वापिस अग्नि में

यज्ञस्य सन्ततिरसि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै नयामि

कहकर ड़ाले। और हाथ जोड़कर अग्नि से आशीर्वाद मांगते हुए पढिये :

धर्मं देहि धनं देहि पुत्र पौत्राश्च देहि मे।
आयु रारोग्यमैश्वर्यं देहि मे हव्य वाहन ॥

भक्तिं देहि श्रियं देहि सुखं देहि स्वतन्त्रताम् ।
देहि भोगं च मोक्षं च मनोभिलषितं तथा ॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ट ब्रह्मविष्णु महेश्वराः ।
यत्र देवालये सर्वे तत्र गच्छ हुताशन ॥

अन्त में

"तेजोसि - तेजो मयि देहि"

कहकर अग्निकी ज्योति दोनों हाथों से अपने में समा लीजिये।

इति वैश्वदेव विधिः

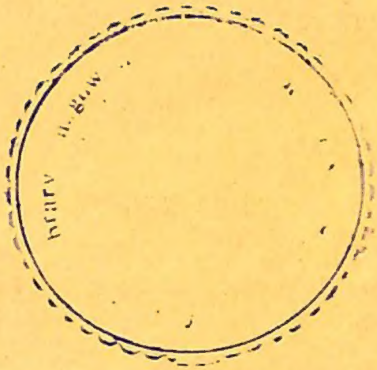

Gopinath Jee Trust
Acc No 5
1983
2.50

प्रतीक्षा में रहिए :-

श्री परमानन्द शोध-संस्थान, श्रीनगर के तत्वावधान में
प्रकाशित होने वाले अन्य ग्रन्थ :-

अ) महाराज्ञी-प्रादुर्भावः ।
(हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित)

आ) श्री अमरेश्वर महात्म्यम् ।
(हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित)

शीघ्र ही श्रद्धालु जनता के लाभार्थ बाज़ार में आयेंगी ।

प्रबन्धक :-
प्रकाशन-विभाग ।

प्रो० काशीनाथ दर
(संचालक श्री परमानन्द-रिसर्च इनस्टीच्यूट द्वारा)
बन्सी आर्ट प्रेस, नई-सड़क में मुद्रिक तथा प्रकाशित